Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

"दौड़" उपन्यास में बदलते सामाजिक संबंधों का चित्रण

पुष्पा यादव
शोध छात्रा,
पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पंजाब, बठिंडा।

Article Info
Volume 4, Issue 3
Page Number : 130-135

Publication Issue :
May-June-2021

Article History
Accepted : 01 June 2021
Published : 15 June 2021

शोध सारांश- आजादी के बाद भारतीय जीवन में जिस प्रकार राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन हुए, उसी प्रकार आधुनिक शिक्षा-दीक्षा से सामाजिक संबंधों में भी परिवर्तन होता जा रहा है। परम्परागत एवं नवीन मूल्यों में टकराव संघर्ष एवं संक्रमणशीलता दिखाई दे रहा है। इस उपन्यास में स्त्री-पुरुषों के प्रेम, विवाह एवं दाम्पत्य जीवन के बदलते हुए प्रतिमान सैटेलाइट पर चलते हुए दिखाई दे रहें हैं। स्त्री-पुरुषों की दासता को अस्वीकार करते हुए बराबरी का सम्मान तथा समानाधिकार पाना चाहती हैं साथ ही लिव इन रिलेशनशिप जैसी पश्चिमी समाज की प्रवृत्ति भी भारतीय समाज में प्रवेश कर चुकी है। वैश्विकरण, उदारीकरण, बाजारवाद तथा उपभोक्तावादी संस्कृति ने जब से समाज पर अपना वर्चस्व कायम किया तब से लोगों का जीवन उसकी चमक-धमक में सिमटता चला गया है।

मुख्य शब्द- दौड़ उपन्यास, सामाजिक संबंध, आर्थिक स्थिति, वैश्वीकरण, हिंदी कथा साहित्य।

इक्कीसवीं सदी सामाजिक संबंधों के परिवर्तन की दिशा में अग्रसर है, जिसमें परंपरागत एवं नवीन मूल्यों में टकराव, संघर्ष एवं संक्रमणशीलता दिखाई देती है। मनुष्य का भौतिक साधनों के प्रति आसक्ति एवं बढ़ते हुए पूँजीवाद तथा वैश्विकरण ने एक नयी अर्थ संस्कृति को जन्म दिया है। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्तर पर बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, बेईमानी, अराजकता, अधिकारों का दुरुपयोग, अकर्मण्यता आदि विकृतियों से समाज आक्रांत होता जा रहा है, जिनसे जीवन के प्राय: सभी क्षेत्रों में इन विकृतियों का प्रभाव गहराई तक पड़ा है। प्रेम विवाह एवं दांपत्य के प्रतिमान भी बदल रहे हैं। स्त्री-पुरुषों की तथाकथित आधुनिक सोच के कारण सामाजिक परिवर्तन हो रहा है। समाज के कुछ प्रतिशत पुरुष स्त्रियों को बराबरी सम्मान तथा समानाधिकार देने के पक्ष में हैं तो कुछ नहीं। नयी और पुरानी पीढ़ी के विचारों में आधुनिकता एवं परम्परा का अंतर आता जा रहा है। आधुनिक समाज में नारियां अपने अस्तित्व के प्रति सजग और सचेत होकर स्वतंत्र निर्णय ले रही हैं। दौड़ उपन्यास में ममता ने नारी स्वातन्त्र्य, नारी-पुरुष संबंध, प्रेम विवाह, वृद्ध जीवन तथा दांपत्य जीवन संबंधी एवं बदलते सामाजिक संबंधों का वर्णन किया है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

ममता कालिया स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य की प्रतिनिधि साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपने साहित्य के द्वारा समाज को एक नयी दिशा प्रदान की है। ममता कालिया ने अपना अध्ययन कई स्थानों पर किया जिसके फलस्वरूप उनके साहित्य में अनेक प्रकार के अनुभव दिखलाई देते हैं। वे हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं की रचनाकार हैं। भारतीय समाज की विशेषताओं और विषमताओं पर अपनी पैनी नज़र रखते हुए ममता कालिया के प्रत्येक रचना के केन्द्र में आज का समाज है। विकासशील समाज में बनते-बिगड़ते सम्बन्ध, प्रगति के आर्थिक-सामाजिक दबाव, स्त्री की प्रगति को देखकर पुरुष मनोविज्ञान की कुण्ठाएँ और कामकाजी स्त्री के संघर्ष आदि ऐसे विषय हैं जिन्हें हम उनके कथा साहित्य में देख सकते हैं।

ममता कालिया कृत 'दौड़' उपन्यास में बदलते सामाजिक संबंध को पूरे यथार्थ के साथ चित्रित किया गया है। समाज में आज का आपसी संबंध वही नहीं है जो एक दशक पूर्व था। भूमंडलीकरण, बाजारीकरण और आर्थिक उदारीकरण के कारण समाज में ऐसा परिवर्तन आया कि पारंपरिक जीवन दर्शन और मूल्यों का महत्त्व समाप्त होता जा रहा है। ममता ने इस उपन्यास के बारे में स्पष्ट करते हुए कहा है कि "आर्थिक उदारीकरण ने भारतीय बाजार को शक्तिशाली बनाया। इसने व्यापार प्रबंधन शिक्षा के द्वार खोले और छात्र वर्ग को व्यापार प्रबंधन में विशेषता हासिल करने के अवसर प्रदान किये। युवा वर्ग ने अपने कैरियर को सफलता दिलाने के लिए इसे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना है। इस तरह वर्तमान सदी में समस्त वाद के साथ एक नया वाद प्रारंभ हो गया-बाजारवाद और उपभोक्तावाद अर्थात 21वीं सदी की आहट ने समाज में बाजारवाद को अधिक महत्त्वपूर्ण बना दिया जिसकी प्रभाव क्षमता के सामने सबकी शक्ति क्षीण पड़ गयी और सारे रिश्ते-नाते मूल्य परंपराएं तथा संस्कृति बाजार के सामने छोटे लगने लगे। बीसवीं सदी का सीधा-सादा खरीददार एक चतुर उपभोक्ता बन गया। जिन युवा-प्रतिभाओं ने यह कमान सँभाली उन्होंने कार्यक्षेत्र में तो खूब कामयाबी पायी पर मानवीय सम्बन्धों के समीकरण उनसे कहीं ज्यादा खिंच गये, तो कही ढीले पड़ गये। दौड़ इन प्रभावों और तनावों की पहचान कराता है।......व्यावसायिकता से आजीविकावाद (कैरियरिज़्म) पैदा होता है और यह आजीविकावाद पारिवारिक सम्बन्धों को और सम्बन्धों की भावात्मकता आदि को नष्टप्राय कर देता है।"[1]

ममता कालिया ने 'दौड़' उपन्यास में आधुनिक भारतीय समाज के बदलते सामाजिक संबंधो और भारतीय समाज एवं जीवन में व्यवसाय जगत् के प्रभाव तथा बढ़ते दबाव की कथा को दर्शाया है। प्रस्तुत उपन्यास के पात्र पवन, सघन, राकेश, रेखा, स्टेला जैसे लोग आज व्यवसाय जगत् की परिस्थितियों में घिरकर यथास्थितिवादी बनकर रह गये हैं। सभी यह जानते हैं कि इस तेज़ दौड़ती ज़िन्दगी में किसी एक जगह बैठे रहकर अपना आगे के जीवन का नियोजन करना सम्भव नहीं है। फिर भी इन चीज़ों के लिए सामाजिक सम्बन्धों में जिस तेजी से बदलाव आया है और रिश्तों से अधिक महत्त्व व्यावसायिक जीवन हो गया है। इससे यही प्रमाणित होता है कि आज के आधुनिक जीवन में वास्तव में रोजगार और सुख सुविधा की ज़िन्दगी ही सब कुछ है। आज की नयी पीढ़ी बाकी सबको गौण मानती है। उपन्यास में पवन के सामंतशाही सोच और अपने माँ-बाप के साथ किये गये महाजनी बर्ताव से माँ रेखा और पिता राकेश बहुत आहत होते हैं। इतना ही नहीं ममता कालिया ने उपन्यास में कुछ गौण पात्रों के जरिए ऐसे प्रसंगों का वर्णन किया है, जिसमें आहत होते माताओं तथा पिताओं की विवशता स्पष्ट झलकती है।

उपन्यास में पवन, शरद, अभिषेक जैसे पात्रों के जरिए बाज़ार तथा मार्केटिंग की नीतियों का परिचय दिया है। उपन्यास के प्रारम्भिक अध्यायों में सभी कम्पनियों के प्रोडक्ट्स एवं उन्हें बेचने की चुनौतियों और अन्य व्यवसाय जगत् की समस्याओं का चित्रण किया है। सामाजिक एवं पारिवारिक सम्बन्धों के टूटन एवं खिंचाव को पवन, सघन तथा स्टेला के जरिए उन्होंने बखूबी चित्रित किया है। जब पवन इलाहबाद अपने माँ-बाप से मिलने जाता है तो वे लोग उसेइलाहाबाद के आस-पास ही कही नौकरी ढूंढने को कहते हैं। उन्हें आशा थी कि इस तरह वे अपने बेटे के कैरियर में रुकावट भी नहीं बनेंगे और पवन भी उनके पास रह सकेगा, लेकिन पवन की सोच और दृष्टिकोण कुछ अलग ही होते हैं। वह अपने पिता के कलकत्ते जाकर बसने के सलाह पर कहता है .."पापा मेरे लिए शहर महत्त्वपूर्ण नहीं है, कैरियर है। अब कलकत्ते को ही लिजिए। कहने को महानगर है पर मार्केटिंग की दृष्टि से एकदम लद्धड़। कलकत्ते में प्रोड्यूसर्स का मार्केट है, कंज्यूमर्स का नहीं। मैं ऐसे शहर में रहना चाहता हूँ जहाँ कल्चर हो न हो, कंज्यूमर कल्चर जरूर हो। मुझे संस्कृति नहीं उपभोक्ता संस्कृति चाहिए, तभी मैं कामयाब रहूँगा।"[2] उसके इस एक जवाब ने माता-पिता को स्तंभित कर दिया। वह आदर्श से ज्यादा यथार्थ की ओर झुका हुआ था। इतना ही नहीं जितने दिन वह घर पर रहता है उतने दिन उसका व्यवहार अपने माता-पिता से, विशेषकर माँ से एक पराए व्यक्ति जैसा रहता है। यहाँ तक कि धोबी से इस्त्री होकर आए कपड़ों के लिए पवन ज्यादा पैसे दे देता है तो उसकी माँ उसे समझाती है कि यदि वह टूरिस्ट की तरह पैसे देता रहेगा तो ये लोग सिर चढ़ जाएंगे। लेकिन पवन अपनी माँ की इस बात पर हंगामा खड़ा कर देता है। अपने दफ्तर में मिल रही इज़्ज़त का हवाला देकर माँ को ताने दे बैठता है। साथ ही वह यह भी कहता है कि उसके जन्मदिन पर उसे ग्रीटिंग कार्ड नहीं भेजा गया, जिससे उसके ऑफिस के लोग उसकी हँसी उड़ाते हैं। पवन जानता था कि उसकी माँ किस प्रकार उसका जन्मदिन मनाती है लेकिन उसके ताने से"माँ को लगा उन्हें अपने बेटे को प्यार करने का नया तरीका सीखना पड़ेगा।"[3]

पवन शहर में आने के बाद इस बात से नाराज होता है कि अब उसके कोई भी दोस्त शहर में नहीं रहे, सब-के-सब कैरियर के लिए बाहर जा चुके हैं। वह स्वयं यथार्थवादी है, परन्तु उसी के जैसा व्यवहार दूसरों से मिले ये उसे मंजूर नहीं। अपने पिता से भी वह बिना बात के बहस करता है। उसके पिता के विचार उससे मेल नहीं खाते। उसके पिता जहाँ आध्यात्मिकता, नयी और पुरानी चीज़ों तथा व्यवस्थाओं की तुलना करते हुए पुराने के समर्थन में बोलने लगते हैं तो पवन उनकी यह कहकर आलोचना कर देता है कि उसके पिता नई चीज़ों का फायदा भी उठाते हैं और उसकी आलोचना भी करते हैं। पवन अपने विचारों से न केवल माता-पिता को आहत करता है बल्कि उसके जीवन साथी के चयन तथा उसके साथ वैवाहित जीवन के एक अजीब तरीके से भी वह उन्हें दुख पहुँचाता है।

भारतीय विवाह व्यवस्था को चुनौती देने वाली पश्चिमी समाज प्रवृत्ति भारतीय समाज में भी प्रवेश कर चुकी है। जिसका चित्रण ममता ने उपन्यास में बखूवी चित्रित किया है। लिव इन यानी एक साथ रहने की सहमति, जिसमें कोई तीसरा नहीं होता। यह दो के बीच मौखिक संबंध होता है, जो धीरे-धीरे दैहिक संबंध में बदल जाता है। उपन्यास की पात्र स्टेला विवाह से पहले ही पवन के साथ रहती है। स्टेला पवन की बिजनेस पार्टनर, लाइफ पार्टनर और रूम पार्टनर तीनों है। पवन की माँ को यह बात अच्छी नहीं लगती तब यह माँ को ही समझाता है कि "तुमने देखा क्या है माँ ? इलाहाबाद से निकलोगी तो देखोगी न यहाँ गुजरात सौराष्ट्र में शादी तय होने के बाद लड़की महीने भर ससुराल में रहती है। लड़का-लड़की एक-

दूसरे के तौर–तरीके समझने के बाद ही शादी करते हैं।"[4] इतना ही नहीं जब स्टेला के दिये गये उपहार को भी रेखा अस्वीकार कर देती है तो पवन कहने लगता है कि वह बहुत मंहगा उपहार था, जो अब व्यर्थ जा रहा है। पवन स्टेला के मामले में अपनी माँ से यहां तक कह देता है कि जब उसके पिता ने उनसे विवाह करने की ठानी थी तब उसकी दादी ने भी रेखा को पसन्द नहीं किया था तब क्या पिता जी रुके थे। रेखा को अपने ही बेटे से यह बात सुनकर धक्का लगता है। किसी प्रकार पवन स्टेला से शादी करने के लिये अपने अभिभावकों को मना लेता है फिर अपने स्वामी जी द्वारा लगाये ग्ये रामकृष्णपुरम में सामूहिक विवाह आयोजन में विवाह कर लेता है। रेखा और राकेश को इससे थोड़ा दुख भी होता है। पवन और स्टेला मुश्किल से कुछ दिन घर पर रहते है कि तभी पवन के चेन्नई जाने और स्टेला के राजकोट और अहमदाबाद में बिजनेस की बागडोर सम्भालने की बात सामने आती है। रेखा और राकेश दोनों पवन को समझाते हैं कि शादी के बाद साथ रहना जरूरी होता है। उसे विवाह के वचनों का भी वास्ता देते हैं, पर पवन फिर से अपने आधुनिक यथार्थवादी विचार उनके सामने यह कहकर रखता है कि "पापा आप भारी–भरकम शब्दों से हमारा रिश्ता बोझिल बना रहे हैं। मैं अपना कैरियर, अपनी आज़ादी कभी नहीं छोड़ूँगा। स्टेला चाहे तो अपना बिजनेस चेन्नई ले चले।"[5]पवन के लिए कैरियर इतना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है कि वह शादी की ज़िम्मेदारियों को भी परे हटा देना चाहता है। रेखा और राकेश को यह अजीब सा लगता है कि उनका दाम्पत्य जीवन सेटेलाइट और इंटरनेट के जरिए चलेगा।अर्थात अब शादी–ब्याह के मामले में सामाजिक परिवर्तन हो रहा है। नई पीढ़ी पुराने संस्कारों को त्यागकर अपनी मर्जी से नवीनता का अपना रही है। स्वतंत्र विचार वृत्ति और उन्मुक्त जीवन जीने की ललक से सहजीवन का नया तरीका आ गया है। सामाजिक जीवन–मूल्यों के परिवर्तन से विभिन्न समस्याएँ भी उपस्थित हो रही है। स्त्री के साथ शारीरिक मानसिक दुर्व्यवहार की संभावनाएं बढ़ गयी हैं।

पवन और स्टेला के चले जाने के बाद सघन (पवन का छोटा भाई) भी अचानक उन्हें यह सूचना देता है कि उसे ताइवान में नौकरी लग गयी है और वह भी चला जाता है। रेखा और राकेश अब अकेले हो जाते है। रेखा और राकेश जिस बात से घबरा रहे थे आखिर वही बात होती है। वे जिस गली में रहते थे उसे बुढ्ढा–बुढ्ढी गली कहा जाता है क्योंकि सभी के घरों के चिराग अपने माँ–बाप को छोड़कर कैरियर बनाने के लिए दूसरे शहरों तथा विदेश चले जाते हैं। रह जाते है तो सिर्फ बूढ़े माँ–बाप, एक कार, एक कुत्ता और उनके घरों में उनके बच्चों द्वारा भेजी गयी महंगी चीज़े। रेखा को भी पवन माइक्रोवेब और वीसीडी दे जाता है लेकिन रेखा को इन चीज़ों की कोई जरूरत नहीं थी। जरूरत थी तो बस इस बात की कि उसके घर में बसे सन्नाटे को तोड़ने की, खालीपन और अकेलेपन के ऊब से वह बाहर आना चाहती थी। फिर दोनों बच्चों के चले जाने पर इतना काम नहीं रह गया था कि वह किसी में व्यस्त रहकर अपना समय काट लेती। उन्हें इस बात के लिए अब खुद पर ही जैसे एक क्षोभ सा होने लगा था कि बचपन में उसी ने बच्चों को आगे बढ़ने की शिक्षा दी थी और आज जब वे आगे निकल गए हैं तो उनसे दूर होने का गम सता रहा है। वह अजीबों–गरीब उलझनों में फंसी हुई थी। उन्हें अब रह–रहकर अपने बच्चों के बचपन और उनके किस्से याद आ रहे थे।"उसका मन बार–बार बच्चों के बचपन और लड़कपन की यादों में उलझ जाता। घूम–फिरकर वही दिन याद आते जब पुन्नू छोटू धोती से लिपट–लिपट जाते थे।.....क्या दिन थे वे। तब इनकी दुनिया की धुरी माँ थी, उसी में था इनका ब्रह्मांड और ब्रह्म। ...... रेखा के कलेजे में हूक–सी उठती , कितनी जल्दी गुजर गये वे दिन अब तो दिन महीने में बदल जाते हैं और महीने साल में, वह अपने बच्चों को भर नजर देख भी नहीं पाती।

वैसे उसी ने तो उन्हें सारे सबक याद कराए थे। इसी प्रक्रिया में बच्चों के अन्दर तेजी, तेजस्विता और त्वरा विकसित हुई प्रतिभा, पराक्रम और महत्त्वकांक्षा के गुण आए। वही तो सिखाती थी उन्हें जीवन में हमेशा आगे–ही–आगे बढ़ों, कभी पीछे मुड़कर मत देखो।"[6]

ममता कालिया ने पवन, सघन और स्टेला के जरिए जहाँ एक ओर बदलते पारिवारिक सम्बन्धों को दर्शाया है वही दूसरी ओर एक ऐसे कटु सत्य के भी दर्शन कराए हैं, जिसमें समाज के प्रायः वे सभी परिवार भुगत रहे हैं जिनके बच्चे प्रवासियों के तरह हो गये है, जिनके लिये पराया देश और वहां की सुख–सुविधा तथा नौकरी के लालच में फंसे हुए हैं। मिस्टर और मिसेज सोनी ऐसे ही दो मजबूर माता–पिता हैं। उनका बेटा सिद्धार्थ विदेश में जा बसा है। मिस्टर सोनी को अचानक दिल का दौरा पड़ता है और वे गुज़र जाते हैं। जब सिद्धार्थ को उसके फ़र्ज़ के लिए बुलाया जाता है तो बहाने बनाता है कि उसके घर तक आने में हफ्ते भर से अधिक लगेगा। वह अपनी माँ को समझाते हुए कहता है–'हम सब तो आज लुट गये ममा। लोग बता रहे हैं मेरे आने तक डैडी को रखा नहीं जा सकता। आप ऐसा कीजिए, इस काम के लिए किसी को बेटा बनाकर दाह–संस्कार करवाइए। मेरे लिए तेरह दिन रुकना मुश्किल होगा।' मिन्हाज साहब के समझाने पर वह यह भी कहता है कि विदेश के मुर्दा घरों में माँ–बाप के शव महीनों पड़े रहते है और जब बच्चों को फुर्सत होती है तभी वे जाकर उनका अंतिम संस्कार करते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आजादी के बाद भारतीय जीवन में जिस प्रकार राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन हुए, उसी प्रकार आधुनिक शिक्षा–दीक्षा से सामाजिक संबंधों में भी परिवर्तन होता जा रहा है। परम्परागत एवं नवीन मूल्यों में टकराव संघर्ष एवं संक्रमणशीलता दिखाई दे रही है। इस उपन्यास में स्त्री–पुरुषों के प्रेम, विवाह एवं दांपत्य जीवन के बदलते हुए प्रतिमान सैटेलाइट पर चलते हुए दिखाई दे रहें हैं। स्त्री–पुरुषों की दासता को अस्वीकार करते हुए बराबरी का सम्मान तथा समानाधिकार पाना चाहती हैं साथ ही लिव इन रिलेशनशिप जैसी पश्चिमी समाज की प्रवृत्ति भी भारतीय समाज में प्रवेश कर चुकी है। वैश्विकरण, उदारीकरण, बाजारवाद तथा उपभोक्तावादी संस्कृति ने जब से समाज पर अपना वर्चस्व कायम किया तब से लोगों का जीवन उसकी चमक–धमक में सिमटता चला गया है। बाजारवाद तथा उपभोक्तावादी संस्कृति के चलते आज लोग रिश्तों से अधिक महत्त्व नौकरी को देने के लिये विवश हैं और व्यक्ति एक मशीन बनता जा रहा है, जहां न ही नैतिकता बची है और न ही अपनी जिम्मेदारी का एहसास। आधुनिक समाज में चलते बाजारवाद तथा उपभोक्तावाद में सिमटती ज़िन्दगियों का परिचय कराता हुआ यह एक ऐसा उपन्यास है जिसमें ममता ने बदलते सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों को बखूबी चित्रित किया है।

सन्दर्भ सूची-

1. कालिया,ममता, दौड़, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्कण, 2000, पृष्ठ संख्या, 5-6
2. वही..... पृष्ठ संख्या 40-41
3. वही..... पृष्ठ संख्या 43
4. वही..... पृष्ठ संख्या 52
5. वही..... पृष्ठ संख्या 65
6. वही..... पृष्ठ संख्या 76